



आवारा बंजारा : एक कोशिश

राकेश कुमार वर्मा

मैं फिरता आवारा बंजारा,
बे अदबी की ठोर लिए,
मैं फिरता तनहा बंजारा.....
किसका सानी, कहा को पानी,
न जुग जगहा की रहे निशानी,
मैं भीड़ भाड़ से दूर खड़ा,
इस जग की सब है ठुकरानी.....

.....वो बात कही की और रही,
रण जंग में मेरी भोर बही,
न प्रेम रश, न बदन कश,
मेरी जवानी है मस्तानी.....
नैनो को पाशो से बंधती है,
होंटो के हांशो से ठनती है,
मैं मूकबधिर हू अंजाना,
अनजानी रहो का हू मारा,
बेजारी का जिस्म लिए, मैं,
फिरता आवारा बंजारा.....
कदम मेरे हैं, ठाप नहीं,
सकल मेरी, पर मैं आप नहीं,
ऐसो के खून में रंगा हू,
कपड़ो में हू पर नंगा हू,
ये एक कहानी हो तो कहू,
मेरी ही जुबानी हो तो कहू,
न यहाँ का हू न वहा का हू,
मेरा देश बचाओ मैं जहा का हू.....



माट्टी ये मेरी सोंधी है,
वीरो के खून से ज्योंदी है,
ये चार खड़े है लोग वहा,
मांगे है जिनने वोट यहाँ,
बातो में माँ को बेचा है,
हाथो से खुदको सींचा है.....
न ये तेरे है न मेरे है,
अपने ही घर के लुटेरे है.....
अब कौन यहाँ जो रण लेगा,
हाथ उठा के प्रण लेगा,
जुग में ये शान बचानी है,
के हममे भी अभी जवानी है.....
राणा कि हठ में बंध जाओ,
मीरा के कंठ में मत गाओ,
अबला कि कौन है सुनता यहाँ,
तबले की तान पर संग आओ,
अभी वख्त खड़ा है साथ यहाँ.....
देश बदलने का दिन है आया,
क्या खून ने तेरे पलटी मारी????
क्यों सोये हो,
क्यों रोये हो,
पग पग पे जाल बिछोये हो,
कभी जाती धर्म पे बाट रहे,
चुपके से जेबे काट रहे,
न दीन कोई, न देवता कोई,
सब अपनी ही मजदूरी खाता है,
ये सफ़ेद पोश है खुदा नहीं,
जो हममे उन्नति दिलाता है.....
वो सफ़ेद पोश है सोच रहे,
कितना मैं हांके जाता हूँ,



ये बात उन्हें भी ध्यान रहे,
उनको भी होश दिलाता हूँ,
अपने कर्मों की राह बदल,
सफ़ेद चोगे को दूर पटक,
कर काम नैक, जो नेकी बाकि,
नहीं तो पीछे हैं तेरे दुनिया आती.....

बदलेगा मेरा राष्ट्र यही,
फूटेगी नयी क्रांति,
हर सीने में आग सा जलता है,
मेरा देश ही भला क्यों नहीं बदलता है?
ये सन्देश लिए मैं आया हूँ,
मैं राणा के रण का जाया हूँ,
मैं फिरता आवारा बंजारा,
बे अदबी कि ठोर लिए, मैं फिरता तनहा बंजारा.....